Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

मध्यकाल में मुगल अमीर वर्ग का सामाजिक जीवन

Raman Yadav*

Extension Lecturer, Baijanath Choudhary Govt College for Women, Nangal Choudhary, Haryana

सार - मध्यकाल में अमीर वर्ग का न केवल प्रशासन पर प्रभाव था, अपितु सामाजिक दृष्टि से भी वह एक प्रभावशाली वर्ग था। उत्तर मुगलकालीन अमीर वर्ग के सामाजिक जीवन की झलक हमें समकालीन फारसी स्रोतों तथा कुछ विदेशी यात्रियों के विवरणों से प्राप्त होती है।

----------X----------

उपलब्ध स्रोतों के आधार पर 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारतीय समाज को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। इन तीनों वर्गों के जीवन स्तर में बहुत अंतर था। इस सामाजिक ढांचे में सबसे ऊपर बादशाह उसके परिजन तथा अमीर थे। मध्यम वर्ग में व्यापारी, दलाल, अध्यापक, वैद्य, हकीम जैसे व्यावसायिक और राज कर्मचारी आते थे। इस वर्ग का नगरीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था। साधारण लोगों के मुकाबले इन्हें अशरफ या भद्र लोग कहा जाता था।[1] निम्न वर्ग में कृषक, चर्मकार, बढ़ई, धोबी, तेली, कसाई, नाई आदि आते थे। निम्नवर्ग का जीवन कष्टदायक होता था। निम्न वर्ग तन ढकने के लिए न्यूनŸाम और सस्ते वस्त्रों का प्रयोग करता था। उनकी आय कम थी और साधन सीमित।[2]

उपलब्ध स्रोतों से ज्ञात होता है कि अमीरों का स्तर बादशाहों से कम शानों-शौकत वाला न था। अमीरों का पूरा प्रयास रहता था कि उनका जीवन स्तर बादशाह के जैसा रहे। उनके ऐश्वर्य पूर्ण जीवन की झलक उनके आवास, खान-पान तथा उनकी वेशभूषा और उनके रहन-सहन से झलकती थी, जिसका क्रमशः विवरण इस प्रकार है:-

(अ) आवास:

अमीर वर्ग के आवासों के संबंध में हमें कम सूचना मिलती है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वे शाही भवनों की योजना पर निर्मित किए जाते थे।[3] देश के विभिन्न भागों में अमीर वर्ग के द्वारा अपने भवन बनाने के लिए एक समान पद्धति नहीं अपनाई गई थी। अलग-अलग क्षेत्र की जलवायु, कच्चे माल की उपलब्धता और कारीगरों के बनाने के ढंग आदि सभी एक भवन को बनाने के लिए मुख्य कारक थी।[4] विदेशी यात्री मेनरिक दिल्ली और लाहौर में अमीरों व धनाड्य व्यक्तियों के प्रभावशाली और सुंदर ढंग से बने हुए घरों की प्रशंसा करता है।[5] बंगाल में अमीरों के घरों के एक और तालाब दूसरी ओर पुष्पवाटिका, तीसरी ओर बासों की झाड़ी और चैथी ओर खुले स्थान होते थे।[6] इस प्रकार इनकी अपनी विशेषता थी। गुजरात के अमीरों के घर ईंटों और बड़े-बड़े पत्थरों व चूने की परत से बने होते थे। गुजरात भी गृह निर्माण में अत्यधिक उन्नत था।[7]

अमीरों के महल विस्तीर्ण प्रकोष्ठों वाले और विशाल होते थे। उनके आवास में एक कक्ष दूसरे कक्ष से संलग्न रहता था। इसी भवन में बैठकखाना, स्नानगार, एक सरोवर, एक विस्तृत आंगन और पुस्तकालय भी होता था। महिलाओं के लिए अलग कक्ष होता था जिसे हरम कहा जाता था।[8]

हिन्दू और मुस्लिम अमीरों के भवनों में स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से कुछ भिन्नताएं भी पाई जाती थी। हिंदू अमीरों के महलों के मध्य में उद्यान की व्यवस्था थी। राजपूताना के हिंदू अमीरों के महलों के अंदर चित्रकारी तथा नक्काशी करके

[1] प्राणनाथ, चैपड़ा, सम आसपैक्टस आफ सोषल लाइफ डयूरिंग द मुगल एज (1526-1707), जयपुर, 1963, पृष्ठ 45

[2] पुष्पा सूरी, सोषल कंडीशन इन एटीन्थ सेन्युरी आफ नोरदन इण्डिया, दिल्ली विश्वविद्यालय 1977, पृष्ठ 28

[3] मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, अलीगढ़, 1998, पृष्ठ 425

[4] के॰एम॰ अशरफ, हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन और उनकी परिस्थितियां, हिंदी अनुवाद, के॰एस॰ लाल, दिल्ली, 1990, पृष्ठ 212

[5] मेनरीक, ट्रेवल्स आफ क्राय सबसटेन मेनरीक, सम्पादक ल्यूराड एवं होस्टन, लंदन, 1929, पृष्ठ 97

[6] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाईफ एंड लैटर्स अंडर द मुगल्स, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ 264

[7] ए॰एल॰ श्रीवास्तव, मेडिवल इण्डियन कल्चर, आगरा, 1964, पृष्ठ 38

[8] मुहम्मद उमर, अर्बन कल्चर इन नार्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, दिल्ली, 2001, पृष्ठ 191

www.ignited.in

उन्हें सजाया जाने की परम्परा थी।[9] हिन्दू भवन निर्माण शैली का आधार भारतीय और फारसी स्थापत्य कला का सम्मिश्रण भी था। हिन्दू अमीरों के निवास स्थानों की दीवारों पर सफेदी की हुई और वे चित्रित होती थी और दरवाजे लकड़ी के बने होते थे, जिन पर नक्काशी की जाती थी।[10]

कलाविद जे.फ्रग्यूसन ने लिखा है कि "ये भवन मुख्यतया पत्थर के बने होते थे। इनके परिसर में सुंदर ढंग से झीलों का निर्माण किया गया था।"[11]

जोधपुर का सुदृढ़ किला राजपूत अमीरों के आवास का एक प्रमुख उदाहरण है। महाराजा अजीत सिंह ने किले के छः द्वारों में से दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर स्थित फतहपोल का निर्माण करवा था। 'दौलतखाना' नामक एक बड़े महल का निर्माण महाराजा ने करवाया, जिसे बाद में 'अजीत विलास' के नाम से पुकारा जाने लगा। इसी महल में अजीतसिंह की हत्या की गई थी। इस महल की छत भारी अलंकृति स्तम्भों पर टिकाई गई है। दौलतखाने के ऊपर व मोती महल के सामने का 'बीच का महल' भी महाराजा ने ही बनवाया था। महाराजा ने सम्भवतः सामूहिक भोज के लिये 'भोजन-साल' तथा अपने शयन के लिये 'ख्वाबगाह के महल' का निर्माण करवाया था। अजीत सिंह ने अपने रनिवास के लिये 'जनाना-महल' भी बनवाया था जिसमें छोटे-छोटे पृथक्-पृथक् चैबीस निवास स्थान थे। जनाना में एक 'रंग-साला' का भी निर्माण करवाया गया था।[12]

इसी प्रकार सवाई जय सिंह ने आधुनिक जयपुर शहर की स्थापना की और वहां रहने का शानदार आवास निर्मित करवाया। सवाई जयसिंह ने ही उज्जैन, दिल्ली, जयपुर और मथुरा जैसे शहरों में भी जंतर-मंतर की स्थापना करवाई थी।[13]

इस प्रकार अन्य हिन्दू अमीरों ने भी अपने आवासों पर खूब धन खर्च किया था। उनके आवासों में प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा होती थी।

मुस्लिम अमीरों के भवनों को हम दो भागों में बांट सकते हैं- जनाना और मर्दाना। मर्दाने भाग में बैठक खाना होता था, जहां पर इनके अपने अधिकारिक निवास, एक स्नान गृह और शयनकक्ष होते थे। आंगन के पीछे रसोई घर, शौचालय और अन्य आवश्यक भवन होते थे। मुसलमानों के घरों में आज्ञा के बिना आना मना होता था। चैखट से कुछ दूरी पर एक फव्वारा होता था, जो चारों तरफ पानी छोड़ता था।[14]

भीमसेन के अनुसार अमानत खाँ, जो केवल 700 का ही मनसबदार था फाजिलपुर (बुरहान पुर) में एक बहुत ही बड़ी एवं शानदार हवेली बनवायी थी जिससे मिला हुआ एक उद्यान था तथा हवेली के अन्दर अनेक तालाब थे जिनमें एक नहर से पानी आता था।[15] दरगाह कुली खां द्वारा लिखित ग्रन्थ "मुरक्का-ए-दिल्ली" मुहम्मद शाह के शासन के समय की बहुत अच्छी जानकारी देता है। इसमें बताया गया है कि चांदनी चैक एक बाजार था और इसके पास अमीरों की बड़ी-बड़ी सुन्दर हवेली बनी हुई थी।[16] मुनीम खाँ-ए-खाना एक प्रमुख अमीर था जिसने वजीर का पद भी प्राप्त किया था। उसने अपने आवास के लिए लाखों रूपया खर्च किया था।[17] नवाब शुजाऊउद्दौला ने बहुत सुंदर इमारतें बनवाई। फैजाबाद में उसने इन इमारतों में कुछ बाग भी बनवाए जैसे गुलाब बाग, मोती बाग आदि। कुछ प्रमुख इमारतें मोती महल, जंगली महल और बादशाह महल भी इसी समय बने। इसी प्रकार नजीबउदद्दौला ने अपने नाम पर नजीबाबाद नगर बसाया था। नवाब जफरखां ने मुर्शिदाबाद नगर बसाने की तैयारी की, जो एक प्रकार से पश्चिमी शहर की नकल थी यहां पर उसने अनेक शाही इमारतें जैसे दीवान खाना, जीलाऊ खाना आदि बनवाये।[18]

अमीर वर्ग के घरों का सबसे महत्वपूर्ण भाग "दीवानखाना" होता था। यह बहुत सुंदर तरीके से सजाया जाता था। इसको बहुत ही सुंदर फूलों वाले गलीचे, रेशमी व जड़ाऊयुक्त पर्दे और सुंदर-सुंदर झुमरों के साथ सजाया जाता था। अमीरों के आवासों में उनके व्यक्तिगत प्रयोग के लिए पुस्तकालय भी होता था।[19]

अमीर वर्ग के भवनों में महिलाओं के रहने के स्थान को हरम कहा जाता था। मुगल अमीर अपने बादशाहों का अनुकरण कर अपने महल में अधिक से अधिक स्त्रियाँ रखने की कोशिश

[9] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, दिल्ली, 1991, पृष्ठ 21

[10] हरफूल सिंह आर्य, मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, जयपुर, 1998, पृष्ठ 304

[11] जे॰पी॰ फ्रग्यूसन, हिस्ट्री ऑफ़ इण्डियन ईस्ट्रन आर्किटेक्चर, लंदन, 1865

[12] मीरा मित्रा, महाराजा अजीत सिंह एवं उनका युग, जयपुर, 1980, पृष्ठ 248-49

[13] जादूनाथ सरकार, द हिस्ट्री आफ जयपुर, सम्पादित, रघुबीर सिंह, दिल्ली, पृष्ठ 195, 2009

[14] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाईफ एंड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 261

[15] अतहर अली, औरंगजेबकालीन मुगल अमीर-वर्ग, हिन्दी अनुवाद डॉ. राधेश्याम, दिल्ली, 1977, पृष्ठ 234

[16] दरगाह कुली खां, मुरक्का-ए-देहली, अंग्रेजी अनुवाद चन्द्रशेखर, शमामित्रा चिनाय, दिल्ली, 1989, पृष्ठ 21

[17] विलियम इरविन, दि लैटर मुगलस, दिल्ली, 2011, पृष्ठ 126

[18] मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द ऐटीन्थ सेन्चुरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 428-29

[19] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाईफ एंड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 261

www.ignited.in

करते थे। हरम में महिलाओं की संख्या को सत्ता और शक्ति का प्रतीक समझा जाता था।[20]

हरम में मुख्य द्वार को छोड़ कर अन्य केाई खिड़की और दरवाजा नहीं होता था। हरम में महिलाएं अपने पूर्व नियोजित स्थान पर ही बैठती और सोती थी जिन्हें मसनद कहा जाता था। मसनद विभिन्न प्रकार के रंगों के कपड़ों का बना होता था। क्योंकि यह स्थान सम्मानजनक था। इसलिए कोई और उच्च श्रेणी की महिला आ जाती थी, तो पूर्व महिला को वह स्थान रिक्त करके कहीं और बैठना पड़ता था।[21] मसनद अंतःपुर के पिछले हिस्से में होती थी। अंतःपुर के बहार चारों तरफ ऊँची दीवारें होती थी। इसके अंदर एक उद्यान तथा एक तालाब होता था।[22]

सतरहवीं सदी के विदेशी यात्री बर्नियर के अनुसार अमीरों के मकान बगीचों के बीच होते थे, ताकि चारों ओर से आने वाली हवा का आनंद लिया जा सके।[23] एक बरसाती कमरा इन मकानों की छत पर जरूर बना होता था। शहरों में बने भवन मुख्यतः दो मंजिला व छज्जानुमा होते थे, छज्जा मंजिलों को दो भागों में बांटता था। इनकी छाया से ये भवन गर्मियों में ठंडे रहते थे।

सभी महलों में गर्मियों में सोने के लिए गलियारे बने होते थे। गलियारे के साथ में ही कमरा होता था, ताकि वर्षा होने पर वहां ठहर सके। सर्दियों में वे उसे धूप संेकने के लिए प्रयोग करते थे। कुछ घरों में लंबा तथा चैड़ा गलियारा होता था। जिसमें बहार की तरफ जाली बनी होती थी, ताकि अंदर से बिना किसी को दिखाई दिए बाहर की तरफ देखा जा सके। पंखों से कमरों को ठंडा करने की विधि की नकल ईरानी महलों से की गई थी।[24] अमीर वर्ग द्वारा आपातकाल में अपने घर को छोड़ने के लिए प्रयोग किए जाने वाले गुप्त रास्त को खिलसाह कहा जाता था। अमीरों के आवास अधिकांशतः नदियों के किनारे पर होते थे। इन आवासों में धूप और गर्मी से बचने के लिए तहखानों का भी निर्माण करवाया जाता था जिनमें लकड़ी के बने हुए बड़े-बड़े पंखे होते थे जिन पर मोटा कपड़ा बंधा होता था।[25]

(क) उपस्कर:

जहां तक अमीर वर्ग के निवास गृहों में प्रयुक्त की जाने वाली वस्तुओं का संबंध है, इस सदंर्भ में सबसे अधिक उपयोग में आने वाली वस्तु खाट या चारपाई होती थी। चारपाई आज ही के समान चार पायों पर आधारित चार लकड़ी की पट्टियों से बनती थी। उनमें सूती या रेशमी निवाड़ बुनी जाती थी और इसके पायों पर रोगन करवाया जाता था।[26] अमीर लोग अपनी पलंग को सोने चांदी यहां तक की जवाहरात से भी सजाकर रखते थे। अमीरों के यहां बिछावन बड़े कीमती होते थे, ये लोग गर्मी के मौसम में सफेद सूती और रेशमी चादरों का इस्तेमाल करते थे जोकि दूध के झाग से भी अधिक मुलायम व सफेद होती थी। सर्दियों के मौसम में इन सूती और रेशमी चदरों का स्थान पशमीना ऊन से बनी बहुत ही कीमती व हल्की गर्म चदरें ले लेती थी।[27] बिस्तर सहित बिछावन की इन सारी वस्तुओं को साधारणतः चपरखट कहा जाता था।

हिंदू अमीर वर्ग कभी-कभी गद्दों के लिए शीतलपाटी नामक चटाई का प्रयोग भी करते थे। इन्द्रकाल के नाम से प्रचलित मूल्यवान कम्बल तथा सरसों के दानों से भरे तकिए और सुख-सुविधा की कीमती सामग्रियों का प्रयोग करते थे।[28]

अमीर लोग कई प्रकार के चंवर भी प्रयोग में लाते थे। अमीर वर्ग अपने दीवानखानों या बैठकों को सुंदर और मूल्यवान कालीनों से सजाते थे जो कश्मीर या फारस से मंगवाये जाते थे। उनके यहां गद्दों पर जाजिम शतरंजी और बलूची को फैलाकर रखने का रिवाज था। गोलाकार गावतकिया या मसनद उस जमाने के फर्नीचर में एक महत्वपूर्ण सामान था, जिसके बिना कोई भी दीवानखाना पूर्ण नहीं समझा जाता था। कमरों को सजाने के लिए पर्दों का इस्तेमाल भी होता था। गुजराती और बनारसी पर्दे ज्यादा पसंद किए जाते थे। कक्ष को जगमगाने के लिए सैंकड़ों दीपक और मशालों का प्रयोग किया जाता था। दीवारों को सुंदर बनाने के लिए उन पर मूल्यवान पत्थरों का प्रयोग भी किया जाता था।[29]

कमरों में गद्दे मुख्यतः कोनों में रखे रहते थे, जिन पर विशष्ट अतिथियों को स्थान दिया जाता था। इन गद्दों के दोनों और

[20] हरबंस मुखिया, भारतीय मुगल, अनुवादक तरूण कुमार, प्रथम हिन्दी संस्करण, 2008, दिल्ली, पृष्ठ 153

[21] मोहम्मद ताहिर, मुगल इण्डिया, खण्ड-2, नई दिल्ली, 1972, पृष्ठ 411

[22] डॉ. ए.एन. कपूर, वी.पी. गुप्ता, मोहिनी गुप्ता, द राइज एण्ड फॉल ऑफ़ द मुगलन एम्पायर, भाग-4, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 186

[23] फ्रैंक्विस बर्नियर, बर्नियर की भारत यात्रा, हिन्दी अनुवाद बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, दिल्ली, 2002, पृष्ठ 151

[24] मोहम्मद ताहिर, मुगल इण्डिया, खण्ड-2, पूर्वोक्त, पृष्ठ 416

[25] पुष्पा सूरी, सोषल कंडीषन इन एटीन्थ सेन्चुरी इन नोरदन इण्डिया, दिल्ली, 1977, पृष्ठ 195

[26] के.एम. अशरफ, पूर्वोक्त, पृष्ठ 212

[27] घनानंद, घनानंद ग्रन्थावली, सम्पादक विश्वानाथ प्रताप मिश्र, काशी, 1952, पृष्ठ 312

[28] ए.सी. दास, बी.एन. पुरी, पी.एन. चैपड़ा, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 57

[29] पुष्पा सूरी, सोषल कंडीषन इन एटीन्थ सेन्चुरी इन नोरदन इण्डिया, पूर्वोक्त, पृष्ठ 199

www.ignited.in

किमखवाब के बड़े तकिए रखे होते थे इसके अलावा मखमल, रेशम के छोटे बड़े अनेक फूलदार तकिए कमरे में कई स्थानों पर रखे होते थे।[30]

इसके अलावा परदों, तम्बुओं और भवनों पर चित्रों का उल्लेख मिलता है। चीनी मिट्टी के बने हुए सुंदर फूलदान व अन्य सुंदर वस्तुएं दीवारों में बने आलों में कमरे की सुंदरता बढ़ाने के लिए रखी जाती थी। शयन कक्षों में सफेद स्वच्छ वस्त्रों, ताजे फूल, रत्नों के झब्बे और मोतियों की झालर के साथ-साथ मधुपान के पात्र भरे रहते थे।[31]

इस प्रकार अमीरों के भवन बहुत विशाल होते थे। उनमें उस समय की प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधापूर्ण वस्तुएं होती थी।

(ब) वेषभूषा:

अमीर वर्ग के लोग अपने वस्त्रों पर खुले हाथ से खर्च करते थे मुस्लिम अमीर वर्ग के लोग सलवार और चूड़ीदार पायजामा पहनते थे। सलवार तीन प्रकार की होती थी सामान्य, पतले अस्त्र वाली और मोटे अस्त्र वाली। अमीरों की वेशभूषा से भी उनका उच्च स्तर झलकता था।[32]

(क) अधोवस्त्र:

उस समय पुरूषों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले अधोवस्त्र में धोती और पायजामा प्रमुख थे। धोती सादी तथा चुन्नटदार दोनों प्रकार से पहनी जाती थी। पाजामे चुस्त तथा ढीले दोनों तरह के धारण किये जाते थे। मुस्लिम सलवार के ऊपर कमीज पहनते थे। "काबा" लंबा कोट जो घुटनों तक लटकता था, ऊपरी वस्त्र के रूप में पहना जाता था। यह आगे से खुला रहता था और यह मलमल या बारीक ऊन का बना होता था, वे अंगीका (एक तरह की जैकेट जिसकी बांह लम्बी होती थी) का भी प्रयोग करते थे। वे फरगल या फर के कोट (रोयेंदार) का भी इस्तेमाल करते थे। बादशाह फरूर्खसियार जब भी दरबार में आता था तो बहुत ही आकर्षक और महंगे कपड़े पहनकर आता था।[33] मुगलकाल में हिन्दू समाज द्वारा चुस्त या चूड़ीदार पायजामा को विशेष मान्यता थी हिंदू अमीर अपने ही देश का बना हुआ लम्बा कोट और पायजामा पहनते थे।[34]

(ख) अधिवास:

पुरूषों द्वारा शरीर के ऊपरी भाग में धारण किये जाने वाले वस्त्रों में कुर्ता, झांगा, नीमा, पगड़ी आदि प्रमुख थे। कुर्ता गले से लेकर जांघ तक लटकता था। उसकी आस्तीनें चुस्त होती थी। ऐतिहासिक तथ्यों से विदित होता है कि हिन्दू अपने कुर्ते के बन्द बायीं ओर तथा मुसलमान दायीं ओर लगाते थे।[35] "झंगा" अंगरखे की तरह का एक वस्त्र था जिसकी कमर पर चुन्नट होती थी। जामा ढीला-ढाला होता था जो चारों ओर से लटकता रहता था। इसमें भी बन्द होते थे। अमीर-उमरा अपने जामे पर जरदोजी का का काम भी करवाते थे।[36]

(ग) शिरोवस्त्र:

अमीर वर्ग के लोग अपने सिर को कभी नंगा नहीं रखते थे। जब वे घर से बाहर निकलते थे, तो सिर पर हमेशा पगड़ी पहनते थे।[37] अमीरों की पगड़ियां मलमल या सोने के धागों से बनी होती थी। हिन्दू अमीरों की पगड़ी लम्बी और रंगीन होती थी। पगड़ी का विशेष प्रचलन था। पगड़ी पर सिरपेंच, कलगी तथा तुर्रा भी लगाया जाता था। बादशाह ने महाराजा अजीत सिंह को जड़ाऊ, सिरपेंच उपहार में दिया था।[38] कश्मीरी टोपियां मुस्लिम अमीर वर्ग द्वारा पहनी जाती थी। गर्मी के कारण जुराबें बहुत कम पहनी जाती थी। उस समय तुर्की जूते अधिक प्रचलित थे, जो सामने से नोंकदार तथा ऊपर से खुले होते थे। इन्हें आसानी से खोला या पहना जा सकता था। शौकीन लोग विशेषकर दरबारी अपने जूते रंगीन मखमल या जरी के बनवाया करते थे, जिन पर रेशम और चमड़े के फीते लगाए जाते थे। बहुधा ऐसे जूतों के ऊपर हीरे जवाहरात भी जड़ाए जाते थे।[39]

(घ) स्त्रियों की पोशाक:

अमीर वर्ग की स्त्रियां रेशम तथा कीमती मलमल से निर्मित पोशाकों का प्रयोग करती थी। हरम की स्त्रियों की पोशाक सोने के धागे तथा अन्य कीमती धातुओं से निर्मित सितारों से

[30] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाईफ एंड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 273

[31] घनानंद, घनानंद ग्रन्थावली, सम्पादक विश्वानाथ प्रताप मिश्र, काशी, 1952, पृष्ठ 313

[32] जे.एल॰ मेहता, एडवांस स्टडी इन द हिस्ट्री ऑफ़ मेडविल इण्डिया (मेडविल इण्डियन सोसाइटी एण्ड कल्चर), दिल्ली, 1995, पृष्ठ 273

[33] जहिरूद्दीन मलिक, द रेन ऑफ़ मुहम्मद शाह, 1719-48, नई दिल्ली, 1977, पृष्ठ 363

[34] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, दिल्ली, 1991, पृष्ठ 36

[35] आर्शीवादीलाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, आगरा, 1976, पृष्ठ 565

[36] मुहम्मद उमर, मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, दिल्ली, पृष्ठ 438-444

[37] मीरा नंदा, यूरोपीयन ट्रैवल्ज अकाउन्टस डयूरिंग द रेन ऑफ़ शाहजहाँ एण्ड औरंगजेब, कुरुक्षेत्र, 1994, पृष्ठ 86-87

[38] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, दिल्ली, 1991, पृष्ठ 37

[39] ए॰सी॰ दास, बी॰एन॰ पुरी, पी॰एन॰ चैपड़ा, भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, पूर्वोक्त, 2004, पृष्ठ 47

www.ignited.in

सुसज्जित रहती थी।[40] मुस्लिम स्त्रियां सामान्य रूप से सलवार तथा कुर्ते का ही प्रयोग करती थी। इनके अतिरिक्त मालिख (एक तरह की ऊपरी पोशाक) पोश्तान, उलग, बनीच, तरहत आदि पोशाकों का भी प्रयोग करती थी। मुस्लिम अमीर वर्ग की स्त्रियां सिर के ऊपर ताजकुलाह, ताकी आदि का प्रयोग करती थी।[41] राजपूत स्त्रियों द्वारा अंगिया, लहंगा, ओढ़नी के बीच सामान्य रूप से दुपट्टों का प्रयोग किया जाता था। इन दुपट्टों पर सोने चांदी की कसीदाकारी होती थी। मुस्लिम औरतें अपने सलवार और कमीज के ऊपर काबा कोट पहनती थी, जो बढ़िया कश्मीरी ऊन से बना होता था। वे उत्तम प्रकार की कश्मीरी शाल का प्रयोग करती थी।[42]

संदर्भ

मित्रा, मीराः महाराजा अजीतसिंह एवं उनका युग, जयपुर, 1980

मुखिया हरबंश: भारतीय मुगल, हिन्दी अनुवाद तरूण कुमार, दिल्ली, 2004

मेहता, जे॰एल॰: एडवांस स्टडी इन द हिस्ट्री आफ मैडविल इण्डिया, दिल्ली, 1995

मोरलैण्ड,डब्ल्यू एच.: इण्डिया एट द डेथ आफ अकबर, हिन्दी अनुवाद सुधा किरन सिन्हा, दिल्ली, 1983

Corresponding Author

Raman Yadav*

Extension Lecturer, Baijanath Choudhary Govt College for Women, Nangal Choudhary, Haryana

[40] एस॰एम॰ जफर, सम कल्चरल आस्पेक्ट ऑफ़ मुस्लिम रूल इन इण्डिया, दिल्ली, 1972, पृष्ठ 97

[41] वही, पृष्ठ 104

[42] जे॰ एल॰ मेहता, एडवांस स्टडी इन द हिस्ट्री ऑफ़ मेडविल इण्डिया (मेडविल इण्डियन सोसाइटी एण्ड कल्चर), पूर्वोक्त, पृष्ठ 273